thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

उर ज्योतिः चक्रधु आर्याय — ओ३म् — आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : ११६ ● अंक : ४३ ● १८ नवम्बर, २०१४ मार्ग शीर्ष कृ० एकादशी सम्वत् २०७१ ● दयानन्दाब्द १६० वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११५

नारी उत्थान के प्रथम उद्घोषक महर्षि दयानन्द सरस्वती

-देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य समाज, गोला गाकरननाथ का 114वां वार्षिकोत्सव दिनांक 10, 11 व 12 नवम्बर 14 को दयानन्द बाल विद्या मदिर पू. मा. वि. गोला में सम्पन्न हुआ। जिसमें मेघावी छात्र अलंकार समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। दिनांक 12 नवम्बर 14 को अपराह्न 3 से 5 बजे तक आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि नारी को उसका समुचित सम्मान दिलाने के लिए उसको सुशिक्षित बनाने के लिए सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने उद्घोषणा की थी। वे जब सामाजिक क्षेत्र में आये तो हमारा देश पराधीन था। नारी उत्पीड़न, छुआछूत ढोंग, पाखंड खूब फैल रहा था। पाखण्डी ब्राह्मणों ने स्त्री शूद्रौनाधीयताम् इति श्रुतेः कहकर नारी को पढ़ने के अधिकार से वंचित कर दिया था। पुरूष समाज उसे सभी तरह से उत्पीड़ित करता था उसे अबला बना दिया था- महर्षि ने पराधीनता के मूल में इन सभी बुराइयों में सबसे अधिक नारी उत्पीड़न को माना और उसे मातृशक्ति कहकर सम्मानित किया और कहा कि नारी ही संतान की निर्मात्री है, माता है। भगवान राम, कृष्ण, शिवाजी, महाराणा प्रताप, सरदार भगत सिंह आदि सभी अपनी माँ की राष्ट्र को देन हैं। परंतु आज नारी को पढ़ने से ही वंचित कर दिया गया है। फिर संतान कैसे संवरेगी। उन्होने नारी को सुशिक्षित बनाने के लिए बालिका विद्यालयों के निर्माण का मार्गदर्शन दिया। सभी बुराइयों से मुक्त देश बनाने के लिए आर्य समाज की स्थापना आन्दोलन के रूप में की। आन्दोलन तीव्र हुआ। अनेक बालक बालिकाओं के विद्यालय खुलने लगे। नारी का मान बढ़ा। स्वराज्य प्राप्ति का आन्दोलन चला जिसमें आर्य नर नारियों ने समान रूप से भाग लेकर देश स्वतंत्र कराया। आज हमारे देश की नारियां सभी क्षेत्रों में अपना शीर्ष स्थान बना रही है। शीर्ष पदों पर अधिष्ठित होकर देश का गौरव बढ़ा रही हैं। वे लोग जो नारी

को पढ़ने के अधिकार से वंचित कर रहे थे उनके भी अनेकानेक बालिका विद्यालय शिक्षा के प्रसार में लग गये हैं। यह जीत महर्षि दयानन्द के नारी को सुशिक्षित बनाने के उद्घोष की जीत है।

आज मुझे आपके विद्यालय में मेघावी छात्र अलंकरण समारोह में आने का सौभाग्य मिला और सभा की अध्यक्षता का दायित्व सौपा गया। मैं आप सभी का अत्यन्त आभारी हूँ। हमारे सभी वैदिक विद्यालय जन-जन में ज्ञान प्रसार का कार्य करते हुए देश को समुन्नत बनाने में समर्थ हों ऐसी प्रभु से प्रार्थना है। आप का यह विद्यालय आधुनिक शिक्षा के साथ- साथ सदैव वैदिक शिक्षा के प्रचार प्रसार में रत रहकर देश की मातृशक्ति को सदैव सम्मान दिलाने में अग्रसर रहें, यह कामना है। इस अवसर पर श्री विजय कुमार राठी-प्रधान, श्री श्रवण कुमार माहेश्वरी-मंत्री, श्री मुन्नालाल स्वर्णकार कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण शुक्ल उ.प्रधान गुरूशरण पाठक, उ. मंत्री पतिराखन लाल वर्मा पुस्तकाध्यक्ष, श्री अवधेश कुमार प्रधानाचार्य मुकुन्द मुरारी प्रधानाचार्य मा. विद्यालय आदि उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि माननीया मीनाक्षी अग्रवाल-अध्यक्ष नगर पालिका परिषद् गोला ने नारी जाति के उत्थान के लिए प्रेरणादायक मार्गदर्शन दिया।

समारोह में पहुँचने पर सर्वश्री विजय कुमार राठी-प्रधान के साथ-साथ श्री श्रवण कुमार माहेश्वरी-मंत्री, श्री मुन्ना लाल स्वर्णकार-कोषाध्यक्ष, श्री कृष्ण शुक्ल-उपप्रधान, श्री गुरूशरण पाठक-उपमंत्री, श्री पतिराखन लाल वर्मा-पुस्काध्यक्ष, आर्य समाज श्री अवधेश कुमार प्रधानाचार्य श्री मुकुन्द मुरारी-प्रधानाचार्य (मा.वि.) आदि ने प्रधान जी का फूल मालाओं से भव्य स्वागत किया। उत्सव में नित्य प्रातः 8 से 10:30 बजे तक भजन व उपदेश हुए। दिनांक 10 को प्रातः 8 बजे ध्वजारोहण हुआ। 12 नवम्बर को अपरान्ह 3 से 5 बजे तक मेघावी छात्र अलंकरण व सांस्कृतिक समारोह हुआ। जिसमें मेघावी छात्र छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

उत्सव में दर्शनाचार्य महावीर मुमुक्षु मुरादाबाद श्री भानु प्रकाश शास्त्री भजनोपदेशक बरेली, श्री अमर मुनि

ऋषि दयानन्द ने सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाने के लिये आर्य समाज की स्थापना की थी -देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्यसमाज बिसौली का शताब्दी समारोह

दिनांक 10 से 12 नवम्बर, 14 तक ससमारोह सम्पन्न

आर्य समाज बिसौली बदायू का शताब्दी समारोह दिनांक 10 से 12 नवम्बर 14 तक आर्य समाज परिसर पिंडारा रोड बिसौली बदांयू में सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री योगेन्द्र कुमार पूर्व विधायक बिसौली ने की।

मुख्य अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने दिनांक 11-11-14 को समारोह में भाग लिया। समारोह स्थल पर पहुँचते ही आर्य समाज के प्रधान सर्वश्री हरिप्रकाश जी ने उनका माल्यार्पण एवं शाल उढाकर स्वागत किया।

समारोह को सम्बोधित करते हुये सभा प्रधान जी ने कहा कि आज देश विघटन के कगार पर है। ढोंग पाखण्ड दुराचार, भ्रष्टाचार, आतंक चरम पर जा रहा है। धर्म प्रचार के अनेक मठ मन्दिर केवल ढोंग पाखण्ड ही फैला रहे हैं और राजनीतिक नेता अपनी सत्ता बचाने या पाने के यत्न में ही लगे रहते हैं। इस ओर किसी का भी ध्यान नहीं जा रहा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना सम्पूर्ण विश्व को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ मानव बनाने के उद्देश्य से की थी और इसे आन्दोलन नाम दिया था। आन्दोलन के प्रभाव से स्वराज्य तो हमें मिला परन्तु सारे दोषों से हमें मुक्ति नहीं मिली। परंतु आर्य समाज ने स्वराज्य प्राप्ति के बाद अन्य विकारों पर ध्यान नहीं रखा। आन्दोलन में कुछ शिथिलता आयी। इसी कारण वे सभी विकार पूरी ऊर्जा से फैल रहे हैं। हम सभी आर्यो को इस पर गंभीरता से चिन्तन करके इन सब विकारों से रहित स्वच्छ सुगठित सुसम्पन्न भारत को बनाने के लिए आर्य समाज आन्दोलन को और तीव्र गति से चलाने का संकल्प लेना है। निश्चय ही हम दृढ निश्चयी बनकर आन्दोलन को तीव्र गति से चलायेंगे तो हमारे संकल्प पूर्ण होंगे और महर्षि दयानन्द के स्वप्नों का भारत.बनाने में हम समर्थ होंगे।

वेदामृतम्

ओ३म् यत्रानन्दा मोदाश्च मुद्रप्रमद आसते
कामस्य यत्राप्ता कामास्तत्र मामृतं कृधीन्द्रायेन्दो परिस्रव।। ऋग.१.११६.११

अर्थ– (यत्र) जहां (आनन्दाश्च मोदाश्च) जहां आनन्द और मोद देने वाली सिद्धियां है (मुदः प्रमुद आसते) वहां आनन्दित और हर्षित मुक्त पुरूष विराजमान है (कामस्य यत्र आप्ताः कायाः) जहां जिस वस्तु की कामना की जाती है वह संकल्प मात्र से ही प्राप्त हो जाती है (तत्र मामकृतं कृधि) उस लोक में मुझे मुक्ति का पथिक बनाइये। इन्द्राय इन्दो परिस्रव हे दयालु परमेश्वर इस (इन्द्राय) जीव के लिए परिश्रव कृपा दृष्टि कीजिए।

भावार्थ– सांसारिक वस्तुओं की कामना से इन्द्रिय सुख प्राप्त होता है, इन्द्रियों के अनुकूल जो न हो उससे दुख मिलता है, तृष्णा इच्छा पूर्ति न हो तो पीड़ा होती है। इस सबसे मुक्ति का उपाय योगाभ्यास है। योग और मोक्ष ही सब विधि दुखों की निवृत्ति का उपाया है। इतनी सम्पूर्ण निवृत्ति मोक्ष प्राप्त कर लेने में ही है। योग मोक्ष का प्रवर्तक अर्थात् प्राप्त करने वाला है।

डा. स्वामी देवव्रत सरस्वती

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

स्वच्छ भारत निर्माण के लिए हम सबकी अन्तर्मन की स्वच्छता अनिवार्य

हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत को विश्व में सर्वोच्च शिखर पर ले जाने के लिए देश को स्वच्छ करने के संकल्प के साथ स्वयं झाड़ू फावड़ा के द्वारा स्वच्छता अभियान का श्रीगणेश किया। निश्चय ही इसके लिए वे सभी देशवासियों के लिए अभिनन्दनीय है। राजनेता जो कुछ कहते हैं उसे जब स्वयं पहले जीवन में उतारते हैं तभी सफलता चरण चूमती है। प्रधानमंत्री जी ने जो हमसे चाहा उसे हम बिना पार्टीबन्दी की भावना के सफल बनाने में संलग्न हो।

इस अभियान के प्रारम्भ होते ही तमाम मंत्रियों व राजनेताओं ने अपने अपने हाथों से झाड़ू लगाकर उद्देश्य की पूर्णता के लिए सहयोगात्मक भाव दर्शाया। साथ ही कुछ ने मात्र प्रदर्शन करके अभियान की भावना को निराहृत करने का भी कार्य किया जो दूरदर्शन के माध्यम से सारे देश ही नहीं सम्पूर्ण विश्व ने उसे देखा। निश्चय ही उनका यह कार्य सर्वथा निन्दनीय है। परंतु इस पर हम सभी को आत्म चिन्तन करने की अपेक्षा है। जब तक हमारा अन्तर्मन स्वच्छ नहीं होगा तब तक ऐसी एक नहीं अनेक घटनायें होंगी। कुछ राजनेताओं ने पार्टीबन्दी की भावना से उसे देखा न सहयोग किया न योजना की सराहना ही की। कुछ ने व्यंग्यात्मक शैली से अपनी विरोधी भावना प्रकट की।

ऐसी घटनायें व सोच भारत के नव निर्माण में बाधक है। अतः प्रत्येक प्रबुद्ध नागरिक को सजग होकर उन बाधक भावनाओं और सोच को जन-जन से समाप्त करने का व्रत लेना है।

आज राजनीति का कलेवर स्वार्थपरता से पूर्ण होता जा रहा है। सभी राजनीतिक नेता अपने अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए सत्य की भी उपेक्षा बड़ी चालाकी से करने में संलग्न रहते हैं। यह सोच बदलनी होगी। परंतु यह सोच तभी बदली जा सकेगी जब सभी अपने मन में पार्टीबन्दी की भावना से हटकर राष्ट्रहित की भावना को जागृत करेंगे।

देश के सभी धर्मगुरू, समाज सेवी संस्थायें इस पर गंभीर मन्थन करें। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना ही आन्दोलन के रूप में की थी। जिन पाखण्ड़ों, कुरीतियों में फंसकर हम पराधीन हुये थे उन सभी के विरूद्ध प्रखर आवाज उठाकर देश के स्वतंत्र होने का मार्ग दर्शन दिया था। देश में आन्दोलन चमत्कार लाया, हम आजाद हुए। अंग्रेजों ने हमें सदैव पराधीन रखने की दुर्भावना से हमारी शिक्षा व्यवस्था ही पलट डाली थी परंतु स्वाधीनता के बाद हमारे नेताओं ने उनकी दुर्भावना को नहीं पहचाना- शिक्षा व्यवस्था वही रखी जिसमें चरित्र निर्माण का पाठ ही नहीं है।

हमारी भारतीय प्राचीन शिक्षा पद्धति में जंगलों के आश्रमों में गुरूजनों के चरणों में बैठकर राजा और रंक सभी के बच्चे एक साथ ज्ञान कोष अपने शिष्यों में भरने को अपना सौभाग्य मानते थे। तब हमारे देश में मर्यादा पुरूषोत्तम राम के सदृश जन जन को सुखी रखने के प्रयास में ही शासन व्यवस्था चलाते थे। तथा योगेश्वर कृष्ण और सुदामा जैसे सखा विश्व में भारत का गौरव बढ़ाते थे। अंग्रेजों की चलाई शिक्षा डिग्री दिलाती है गरीब अमीर का भेद बढ़ाती है जाने कितने सरकारी स्कूलों में पढ़ाई नगण्य है जब कि वेतन सभी को उनकी योग्यता के अनुरूप भरपूर मिलता है परंतु बच्चों की पढ़ाई नहीं होती। जबकि प्राइवेट स्कूलों में अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम में पढ़कर तमाम डिग्रीधारी तैयार होते हैं और निर्धन माता पिता जिनके पास धन का अभाव है, अपने बच्चों को उन स्कूलों में भर्ती कराने में असहाय होकर भाग्य को कोसते हैं। फिर कैसे ऊँच नीच का भेद भाव मिटेगा। कैसे एकत्व का भाव पनपेगा। कैसे मन का कलुष घुलेगा। हमारी भारत सरकार मुख्य रूप में हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को इस पर गहन चिन्तन करने की आवश्यकता है। जब तक जन-जन में ऊँच नीच का भेदभाव रहेगा तब तक मन का कलुष नहीं धुलेगा। जब तक मन का कलुष नहीं मिटेगा तब तक भारत उच्च शिखर पर न चढ़ सकेगा। अस्तु

सरकार को अविलम्ब शिक्षा व्यवस्था में सुधार करने के लिए कटिबद्ध होना होगा। सभी सामाजिक संस्थायें इस व्यवस्था परिवर्तन के लिए सरकार पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनायें। महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र के सुनिर्माण के लिए आर्य समाज आन्दोलन चलाया था। आर्य ज्ञान विचार करें, आजादी के बाद भी हमारा देश क्यों गिरावट की ओर अग्रसर है। विचार मन्थन से स्पष्ट दिग्दर्शित होगा कि हम भी आन्दोलन को तीव्र करने में संलग्न नहीं है। केवल उत्सव करके साप्ताहिक सत्संग करके अपना कार्य पूर्ण मान रहे हैं। हमें दयानन्द के स्वप्न को साकार करने के लिए जागृत होना होगा। हम सभी अपने जीवन को आर्य समाज के दशो नियमों के अनुरूप जीने का व्रत लें। हमारे मनों में जो उदासीनता पनप रही है उसे हम मिटाने का संकल्प लें स्वयं अपने मन को पूरी तरह से स्वच्छ बनाकर जन जन के मन के कलुष मिटाने के लिए आर्य समाज आन्दोलन को तीव्र गति से चलाने का व्रत लें। निश्चय ही हमारे जागृत होने से समाज और राष्ट्र जागृत होगा। और फिर हमारा स्वच्छ भारत बनेगा और विश्व का सिरमौर बनेगा।

सम्पादक

हापुड़ जिला एवं उत्तर प्रदेश तथा देश में जिनसे सम्मानित हुआ

म. वेगराज आर्य भजनोपदेशक के रूप में ख्याति प्राप्त की

हापुड़- 31 अगस्त म. वेगराज आर्य भजनोपदेशक के रूप में प्रसिद्ध थे, उन्होंने हापुड़ जिले का नाम पूरे देश में ऊँचा किया। उत्तर प्रदेश को पूरे देश में सम्मान दिलाया। उनके गीत एवं क्रान्तिकारी उद्बोधन सुनने लोग दूर दूर से आते थे। पं. प्रकाशवीर शास्त्री इसी क्षेत्र से सांसद बने उनके साथ रहकर उन्होंने प्रचार किया। चौधरी चरण सिंह पूर्व प्रधान मंत्री एवं चौ. देवी लाल जी पूर्व उप प्रधानमंत्री तथा मुख्यमंत्री हरियाणा की सभाओं में जनता को एकत्रित करना एवं उनके भाषण से पूर्व जनता को रोकना उनकी ही सामर्थ्य से परिपूर्ण होता था। श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने उन्हें पाक सीमाओं पर भारतीय युवाओं में जोश पैदा करने के लिए भेजा था। वे वीररस के उच्च कोटि के कवि थे- उनकी प्रसिद्ध कविता - जाने किस दिन लाल किला मर्दानी भाषा बोलेगा रे- इस शीर्षक से लोगों में जोश पैदा करते थे। नरेन्द्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने पर उन्हें लगा कि अब लाल किला मर्दानी भाषा बोलेगा पर उनका यह दुर्भाग्य ही रहा कि वे उस भाषा को अपने कानों से न सुन सकें और एक सप्ताह पूर्व ही अन्तिम श्वांस ले ली। वे धैलाना के निकट भूडिया ग्राम के निवासी थे उन्होंने सारे जीवन देशभक्ति एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार किया। 10 वर्ष की आयु से 90 वर्ष तक पूरे 80 वर्ष प्रचार किया है। उनका करूण रस से परिपूर्ण गीत स्व. आशाराम त्यागी पर है जिसे सुनकर लोग रो पड़ते थे। हास्य की पुट भी बीच बीच में लगाते रहते थे। वर्तमान युवा के लिए भी उनके दिल में दर्द था। गढ़मुक्तेश्वर सम्मेलन में कहा था कि जब मैं मारिशस गया तो वहां के लोगों ने पूछा-'तुम उस देश के वासी हो जिस देश में गंगा बहती है, मैने कहा - हाँ, हम उस देश के नहीं उस जिले के वासी है जिस जिले में गंगा बहती है। गंगा हमारी रही है और अब हापुड़ जिला बन गया है। अब भी गंगा हमारी है। अतः हमें गर्व है गंगा नदी पर जो हमारे जिले की शोभा है। इस प्रकार से उनका शब्द चयन सभी को प्रभावित करता था। जिला गाजियाबाद की रजत जयंती स्मारिका में जिले के प्रमुख समाज सेवी लोगों में उनका नाम देखकर मैं गदगद हो गया। वास्तव में वे इसके अधिकारी थी। उन्होंने नारी शिक्षा, दलितोद्धार, दलित शिक्षा, के लिए, पर्दा प्रथा, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, नशाबन्दी के विरोध में ग्राम ग्राम जाकर लोगों में जागृति पैदा की। वे समाजसेवी संत की तरह जियें। वीर योद्धा की तरह लड़े और इतने लम्बे जीवन में साहित्यकार की तरह परिवार में रहकर भी परिवार से दूर ही रहें। आप कलकत्ता से मुम्बई तक बड़े बड़े नगरों में और छोटे छोटे ग्राम में भी जाकर कार्यक्रम से लोगों को प्रभावित करते थे। समाज में व्याप्त कुरीतियों को अपने गीत के माध्यम से सुनाते थे और देश की सुरक्षा पटेल जैसे नेता द्वारा चाहते थे। आज उनकी स्मृतियाँ उनके गीत एवं पुस्तकों में सुरक्षित है। गुरूकुल शिक्षा के प्रति युवानिर्माण, चरित्र निर्माण पर वे बल देते थे। आज आर्य समाज हापुड़ एवं हापुड़ की जिला सभा उनके प्रति अपनी संवेदना प्रकट करती है। पूरे जिले से ही नहीं अपितु पूरे देश से लोगों की शोक संवेदना प्राप्त हो रही है। उनके प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं। गुरूकुल पूठ एवं गुरूकुल तातारपुर-आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. लखनऊ की ओर से उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

-स्वामी धर्मेश्वरानन्द मंत्री, अ.प्र.सभा

thearyasamaj.org

अच्दी पुस्तकें मनुष्य की सबसे उत्तम पथ प्रदर्शक

-देवेन्द्रपाल वर्मा

13.11.2014 को सायं 4 बजे से राजा सलेमपुर हाउस, कैसरबाग, लखनऊ प्रांगण में चांद तालीमी सोसाइटी के तत्वावधान में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित 7 दिवसीय पुस्तक मेले के उद्घाटन के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा कि अच्छी पुस्तकें मनुष्य के जीवन निर्माण की सबसे उत्तम पथ प्रदर्शक है। भारतीय साहित्य के इतिहास में आर्य समाज के द्वारा प्रचुर साहित्य का निर्माण किया गया है। जिसका मानव निर्माण में सर्वाधिक महत्वूपर्ण योगदान है। उन्होंने आगे कहा कि ऐसे पुस्तक मेलों का आयोजन होते रहना चाहिए जिससे युवा पीढ़ी में पुस्तकों के पठन-पाठन में जागरूकता बढ़ेगी। पुस्तक मेले में अमर प्रकाशन गाजियाबाद द्वारा वैदिक साहित्य की पुस्तकों का भी स्टाल लगाया गया है।

सम्मेलन की अध्यक्षता पूर्व राज्यपाल श्री सिब्तेरजी ने की। मौलाना खालिद नदवी, नवाब मीर जाफर अब्दुल्ला रि.आई.ए.एस. अनीस अंसारी प्रो. रमेश दीक्षित, डॉ. खुरशीद जहां आदि ने भी सम्मेलन में जन समूह को सम्बोधित किया।

-सम्वाददाता

प्रो. उमाकान्त उपाध्याय का महा प्रयाणः एक महती क्षति

डॉ. भवानी लाल भारतीय

कल दूरभाष से कोलकाता के श्री चांदरतन जी ने उपाध्याय जी के निधन का दुखद समाचार दिया। उपाध्याय जी से मेरे आधी सदी से अधिक का सम्पर्क और स्नेह सम्बन्ध रहा। वे उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले के एक संस्कारी ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे। वैदिक कर्म काण्ड के प्रति उनका पारिवारिक आकर्षण रहा। आगे चल कर कोलकाता आर्य समाज के वार्षिक अधिवेशनों पर उन्होंने कई दशकों तक आचार्यत्व का दायित्व पूर्ण कार्य संभाला और अपने ही मार्ग दर्शन में पं. आत्मानन्द, पं. नचिकेता आदि कई नवीन कर्मकाण्डी पण्डितों को प्रशिक्षित किया। यों वे अर्थशास्त्र के प्रध्यापक थे किन्तु वेद संस्कृत तथा शास्त्रों में उनकी गहरी गति थी उन्होंने वेद मंत्रों के जैसे लोकोपयोगी कार्य किये हैं, उनसे वैदिक स्वाध्याय में लोगों की रूत्रि बढ़ी है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त का भाष्य इसी कोटि की रचना है।

वेदाध्ययन और लेखन में प्रवृत्त होने के अलावा उन्होंने बंगाल में आर्य समाज की गतिविधियों और विकास को लक्ष्य बनाकर कोलकाता आर्य समाज का इतिहास, आर्य समाज के विद्वान और शास्त्रार्थ आदि अनेक शोधपरक ग्रन्थ लिखे हैं। सत्यार्थ प्रकाश दर्पण सत्यार्थ प्रकाश ज्ञानरूचियों का कोश ही है।

उपाध्याय जी की बहुभाषा विषयों हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और बंगला में उनकी निर्बाध गति थी। उनके अनेक बंगाली ग्रन्थ भी लिखे है। निरन्तर आधी शताब्दी तक कलकत्ता आर्य समाज के मासिक पत्र आर्य संसार का सम्पादन कर उन्होंने आर्य पत्रकार जगत् में एक मानदण्ड स्थापित किया है। लेखन के साथ उपाध्याय जी ने वाणी द्वारा भी वैदिक धर्म का भूमण्डल स्तर पर प्रचार किया था। मेरे उनके निजी सम्बन्ध थे। यदा कदा सम्मेलन समारोहों तथा कलकत्ता के कार्यक्रमों में उनसे भेंट तथा विचार विनिमय के अवसर आते थे। मेरा अमृत महोत्सव जब श्री गंगानगर में आयोजित किया गया तो उपाध्याय जी को अध्यक्षता के लिए आमंत्रित किया गया जिसे उन्होंने प्रेम पूर्वक स्वीकार किया। यों कोलकाता तथा श्रीगंगानगर की औद्योगिक दूरी कम नहीं है और यह लम्बी यात्रा काफी कष्टप्रद होती है। एक सात्विक, समर्पित तथा सुशिक्षित विद्वान का आर्य बौद्धिक जगत् से विदाई लेना एक महती तथा अपूरणीय क्षति है। वे मुझसे बड़े और स्वर्ग का रास्ता भी उन्होंने पहले ही अन्वेषित किया। आगे की पंक्तियों में अब हमारा नाम है।

उपाध्याय जी का सारा परिवार आर्य समाजी था। बड़े भाई रमाकान्त अनुज श्रीकान्त उपाध्याय तथा भतीजे डॉ. वाचस्पति उपाध्याय उनके परिवार के रत्न थे।

-315, शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

प्रिय मुकेश मेरे ध्यान में अपना ध्यान न रहा

एक भावांजलि

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. लखनऊ की अन्तरंग बैठक सभा कार्यालय में माननीय सभा प्रधान देवेन्द्र पाल जी वर्मा की अध्यक्षता में चल रही थी। गत कार्यवाही पढ़कर मैं बैठ गया और सभा कोषाध्यक्ष गत आय-व्यय सुना रहे थे। तभी अचानक फोन आया मैंने जैसे ही सुना विश्वास नहीं हुआ तभी बैठक कक्ष से हटकर फोन सुना और सारी जानकारी प्राप्त की। लेकिन विंश्वास नहीं हो रहा था कि ऐसा भी हो सकता है। पर विधि का विधान ऐसा ही था। यह मानकर मैं विचारों में खो गया। बैठक में मन नहीं लग रहा था। लेकिन सामाजिक कार्य भी अनिवार्य था। बैठक के बाद मैं एक कक्ष में बैठकर चिन्तन करने लगा कि यह आर्यवीर कितना बहादुर एवं आर्य समाज के प्रति समर्पित कार्यकर्ता था, जिसका मैं उदाहरण देकर लोगों को प्रेरणा दिया करता था। 2 अक्टूबर को मैं आर्य समाज भगवानपुर बंगर मेरठ के वार्षिक सम्मेलन में जा रहा था किठौर से पूर्व शाहजहाँपुर नगर में जाते हुए पीछे से आवाज आई रूको-रूको प्रदीप शास्त्री ने गाड़ी को रोक लिया। आचार्य प्रमोद जी मेरे ही साथ थे। पीछे देखा तो मुकेश आर्य कोषाध्यक्ष आर्य समाज खैया-दतियाना जिला हापुड़ आ रहे हैं। कुशलता के पश्चात् बोले इतनी भागदौड़ उचित नहीं है, अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना आप कभी हमें बीच में ही धोखा देकर न चले आओ मैंने बस इतना ही कहा कि यह प्रभू की व्यवस्था है, पता नहीं कौन-कहां-कब-कैसे चला जाये कुछ भी पता नहीं रहता। इतना कहकर मैं सम्मेलन में भगवानपुर चला गया। और वे अपने घर चले गये, बस मैं बैठे-बैठे उसी भाव में खो गया कि जो मुझे ध्यान रखने के लिए सावधान कर रहा था वह स्वयं सावधानी नहीं रख सका और 12 अक्टूबर रविवार को प्रातः 11 बजे एक दुर्घटना में सदा-सदा के लिए हमारा ध्यान रखते रखते चला गया। यह भावुकता उस आर्यवीर के प्रति सदैव एक संस्मरण बना गई जो भुलाये से भी भुलाई नहीं जायेगी। मुकेश आर्य आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता एवं समर्पित युवक थे। संघर्षशील व्यक्तित्व गुरूकुल पूठ के लिए सदैव उत्साहित होकर कार्य करते थे। परिवार में एक बेटा आयु 21 वर्ष, एक बेटी आयु 13 वर्ष को छोड़कर चले गये और धर्मपत्नी बेटी सुधा आर्या को भी छोड़ गये परिवार पर वज्रपात की तरह असह्य वेदना है प्रभु से प्रार्थना है कि परिवार को धैर्य एवं आत्मशक्ति प्रदान करें। हमारी उसे बहुत-बहुत भावान्जलि।

आर्य मित्र परिवार एवं आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. परिवार भी ऐसे युवक के प्रति अपनी शोक संवेदना व्यक्त करता है। सभा प्रधान देवेन्द्र पाल वर्मा एवं सभा कोषाध्यक्ष श्री डा. धीरज सिंह जी ने भी अपनी शोक संवेदना व्यक्त की है। सभा कार्यालय में 2 मिनट मौन रखकर उन्हें अपनी शोक संवेदना व्यक्त की है।

-स्वामी धर्मेश्वरानन्द
मंत्री,
अ.प्र.सभा, उ.प्र.

thearyasamaj.org

जिसने न रूकना सीखा–न झुकना सीखा

अद्भुत व्यक्तित्व की धनी श्रीमती भीका जी कामा

डॉ. सहदेव वर्मा

भारत में ऐसी अनेक वीर महिलायें इसी युग में उत्पन्न हुई हैं, जिन्होंने अपना समस्त जीवन देश की स्वतंत्रता के लिए अर्पित कर अपने पावन कर्तव्य का पालन करते हुए स्वर्गारोहण किया। ऐसी बलिदानी बालाओं में भीका जी कामा का नाम सर्वोपरि है।

इनका जन्म पारसी समाज के एक सम्पन्न परिवार में 24 सितम्बर 1861 को मुम्बई में हुआ था। भीका जी कामा के पिता का नाम सोहराब जी पटेल तथा माता का नाम जीजाबाई था। इनके पिता का मुम्बई में हीरे जवाहरात का व्यवसाय था। समाज में उनकी प्रतिष्ठा तो थी ही व्यापार में भी ईमानदारी का सिक्का चलता था।

जिस समय भीका जी कामा का जन्म हुआ उस समय समाज में लड़कियों की उच्च शिक्षा का प्रायः अभाव ही था, परंतु सोहराब जी पटेल ने रूढ़ियों को तोड़कर भीका जी को उच्च शिक्षा दिलाई। मीका जी जैसे तैसे बड़ी होती गई वैसे वैसे देश में होने वाली सामाजिक तथा राजनीतिक गतिविधियों में रूचि लेने लगी।

मीका जी का विवाह अगस्त 1885 में मुम्बई के बैरिस्टर के.आर.रूस्तम जी कामा से सम्पन्न हुआ। सन् 1857 की क्रान्ति के दर्द भरे फसानों को सुनकर इनकी भावनायें क्रान्तिकारियों के प्रति संवेदनशील हो उठती थीं। वे किसी भी रूप में उनकी सहायता करने के लिए तैयार रहती थीं। परन्तु इनके पति अंग्रेजी शासन के समर्थक थे। इसलिए उन्हें मीका जी की ये बातें पसन्द नहीं थी।

सन् 1850 में मुम्बई में भयानक महामारी प्लेग की बीमारी फैल गयी। भीका जी घर से निकलकर गरीबों तथा असहायों की सेवा और सहायता में जुट गई। बाद में वे स्वयं भी इस रोग से ग्रस्त होकर इलाज करवाने से ठीक तो हो गई, लेकिन उन्हें आराम करने और आगे के लिए पूर्ण चिकित्सा के लिए डॉक्टरों ने यूरोप जाने की सलाह दी। 1902 ई. में वे इसी सिलसिले में लन्दन चली गई। वहाँ जाकर उनका परिचय दादा भाई नौरोजी से हुआ, उन्होंने स्वस्थ होने पर भी भीकाजी को वहीं रहकर सार्वजनिक रूप से कार्य करने की सलाह दी। आगे चलकर यह सलाह उनके जीवन में बहुत उपयोगी सिद्ध हुई।

लन्दन में उनका सम्पर्क वीर सावरकर और श्याम जी कृष्ण वर्मा से हुआ। ध्यान रहे कि श्याम जी महर्षि दयानन्द के योग्य शिष्य थे। ऋषि ने ही उन्हें विदेश जाकर वैदिक धर्म और भारतीय संस्कृति का प्रचार करने का परामर्श दिया था। श्याम जी कृष्ण वर्मा अत्यन्त मेघावी तथा संस्कृत-अंग्रेजी के उद्भट विद्वान थे।

लन्दन जाकर श्याम जी ने एक विशाल भवन खरीदा, जिसका नाम उन्होंने "इण्डिया हाउस" रखा। यही बाद में भारत भवन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस भवन का एक महत्वपूर्ण लाभ यह हुआ कि भारत से लन्दन (इंग्लैंड) जाने वाले शिक्षार्थियों को वहां रहने के लिए स्थान मिल जाता था, परन्तु बाद में तो वहां प्रायः देशभक्त क्रान्तिकारी ही ठहरने लगे, जिनमें वीर सावरकर, लाला हरदयाल, ए.आर. राणा, मदनलाल ढींगरा आदि का नाम उल्लेखनीय है।

लन्दन जाकर भीका जी श्याम जी कृष्ण वर्मा तथा अन्य भारतीय क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आई। स्वतंत्रता के प्रति तो भीका जी पहले से ही समर्पित थी, परंतु वहां देशभक्ति का रंग और गाढ़ा हो गया। लंदन में गुप्तचर विभाग इन भारतीय देशभक्तों को सन्देह की दृष्टि से देखते हुए इन लोगों को निरन्तर परेशान करता था। इस कारण अनेक क्रांतिकारी इंग्लैण्ड छोड़कर फ्रांस चले गये। इसी बीच मीका जी ने फ्रांस के अतिरिक्त जर्मनी, अमेरिका आदि कई देशों का भ्रमण किया। इस भ्रमण के साथ-साथ वहाँ के महत्वपूर्ण तथा प्रभावशाली व्यक्तियों और नेताओं के साथ सम्पर्क भी साधा, क्योंकि उनके मन में भारतीय स्वतंत्रता की भावनाएं हिलोरे ले रही थी, अतः विदेश से सम्पर्क साधना आवश्यक समझती थी। उनकी इन यात्राओं तथा भारत की स्वतंत्रता के प्रति दौड़ धूप करते हुए उनके परिश्रम और साहस को देखकर अमेरिका की यात्रा के समय न्यूयार्क जाने पर वहाँ के एक प्रतिष्ठित समाचार पत्र ने इनका सम्मान करते हुए इन्हें 'जॉन आफ आर्क' की महत्वपूर्ण उपाधि से विभूषित किया था-उस समय की दृष्टि से परतंत्र भारत की एक महिला को इस गौरवपूर्ण सम्मान से अलंकृत करना अपने आप में एक महत्वपूर्ण घटना ही कही जायेगी।

अनेक देश का भ्रमण करने तथा पर्याप्त अनुभव प्राप्त करने के पश्चात इन्होंने फ्रांस की राजधानी पेरिस को अपना स्थायी मुकाम बनाया। वहाँ रहते हुए ये भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रयत्न करती रही। जैसे ही समय मिलता ये किसी भी जुगत से भारतीय क्रान्तिकारियों के लिए अस्त्र-शस्त्र भेजने का जुगाड़ करती रहीं।

अत्यन्त धनी परिवार में जन्म लेने के बावजूद इस साहसी महिला ने आदर्श और दृढ़ संकल्प के बल पर पूर्णतः निरापद और सुखी जीवन युक्त वातावरण को तिलांजलि देकर शक्तिशाली तथा चरमोत्कर्ष पर पहुँचे ब्रिटेन साम्राज्य के विरूद्ध अपने क्रांतिकारी कार्यो से उपजे खतरों तथा कठिनाइयों का निर्भयतापूर्वक डटकर मुकाबला किया। सिद्धान्त रूप से भीका जी अहिंसा में विश्वास करती थीं, लेकिन उन्होंने यथा समय हिंसा का भी जोरदार समर्थन किया।

भीका जी कामा ने 1905 में अपने निकट सहयोगियों विनायक दामोदर सावरकर तथा श्याम जी कृष्ण वर्मा के साथ मिलकर भारतीय ध्वज का पहला डिजाइन तैयार किया था। इस दृष्टि से यह एक ऐतिहासिक कार्य मानना चाहिए। इसमें तीन रंगों का उपयोग किया गया था- हरा, पीला और लाल। उस समय इन रंगों के द्वारा विभिन्न धर्मो और संस्कृति को समेटने का प्रयास किया गया था। ऊपर हरा रंग था, जिसमें आठ गुलाब के फूल अंकित किए गए थे। यह इस्लाम का द्योतक था, पीला रंग बीच में था, जिसमें हिन्दुत्व की भावना प्रदर्शित की गई थी, इसी बीच के भाग में देवनागरी लिपि में -"वन्दे मातरम्" लिखा गया था। नीचे लाल रंग से बौद्धमत का प्रतिनिधित्व किया गया था। इसी लाल रंग में बायीं ओर चाँद तथा दायीं ओर सूर्य का चिन्ह बनाया गया था।

अगस्त 1907 ई. में जर्मनी के स्टूटगार्ट नगर में 'इण्टरनेशनल सोशलिस्ट कांफ्रेस का आयोजन किया गया था, जिसमें अनेक देशों के नेता तथा कार्यकर्ता भाग लेने वाले थे। जब इस कांफ्रेस की उन्हें भनक पड़ी तो उन्हें भारतीय स्वतंत्रता का पक्ष प्रस्तुत करने का यह स्वर्णिम अवसर प्रतीत हुआ। परन्तु जब तक अपना कोई राष्ट्रीय ध्वज न हो तो इतने विशाल सम्मेलन में अपनी पहचान और प्रतिनिधित्व कैसे हो? इसी की पूर्ति के लिए प्रथम बार विदेश में "तिरंगे" के इस ध्वज की उपयोगिता सिद्ध हुई। फिर तो कई बार इस ध्वज में डिजाइन आदि में कई

शेष पृष्ठ.....5

thearyasamaj.org

पृष्ठ.....4 का शेष

परिवर्तन हुए इसका इतिहास अलग है।

इसी ध्वज को उस परिस्थिति में फहराकर भीका जी कामा ने इस सम्मेलन में भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराने की जोरदार अपील की थी। कई देशों से सम्मिलित होने वाले प्रतिनिधियों ने देखा कि एक भारतीय महिला साड़ी पहने हुए बड़े ही आत्मविश्वास के साथ अपनी भावनाओं को प्रकट कर रही है। उन्होंने उस सम्मेलन में कहा-''भारत में ब्रिटिश शासन जारी रहना मानवता के नाम पर कलंक है। इससे महान देश भारत के हितों को भरी क्षति पहुँच रही है।''

उन्होंने वहां एकत्र लोगों से भारत को दासता से मुक्त कराने में सहयोग की अपील की। इसी अपील में उन्होंने भारतीयों का आह्वान करते हुए कहा -''प्यारे भारतीयों आगे बढ़ो, हम भारतीय है और भारत भारतीयों का है।''

वैसे तो भीका जी कामा यूरोप और अमेरिका में काफी प्रसिद्धि पा चुकी थी,परंतु इस इण्टरनेशनल कांफ्रेस के बाद तो वो जन जन के मन में स्थान पा गई। पाठकों को जानकारी के लिए यह भी बता दे कि जर्मनी में फहराया गया वह (तिरंगा) ध्वज पुणे की मराठा एवं केसरी लाइब्रेरी में रखा हुआ है। एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात यह है कि इस सम्मेलन में भारत की पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करते हुए एक प्रस्ताव भी पेश किया गया था।

जर्मनी की इस घटना से दो बातें सिद्ध होती है, एक तो यह है कि विदेश में भारतीय ध्वज फहराने का यह प्रथम अवसर था। दूसरी यह कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने तो सन् 1930 में लाहौर में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पारित किया था, किंतु जर्मनी की उक्त कांग्रेस (इण्टरनेशनल सोशलिस्ट कांफ्रेंस) ऐसा ही प्रस्ताव 22 अगस्त 1907 में प्रस्तुत हुआ था।

चाहे जो हो, परन्तु यह तो मानना पड़ेगा कि इस भारतीय वीर महिला ने भारतीय स्वतंत्रता के लिए विदेशों में रहकर जो अभूतपूर्व, अनुपम कार्य किया है उसकी मिसाल ढूँढे भी नहीं मिलेगी।

सन् 1908 में तत्कालीन पंजाब सरकार ने लाला लाजपत राय तथा सरदार अजीत सिंह को देश निर्वासन का दण्ड दे कर बर्मा भेज दिया, इस समाचार से पेरिस में बैठी मैडम कामा विचलित हो गई। उन्होंने उस सरकार के विरोध में भारत तथा विदेशों में रहने वाले देशवासियों के नाम एक भावुक किंतु जोशपूर्ण अपील जारी की, उससे न केवल भारत में ही हलचल मची वरन् ब्रिटिश सरकार भी एकबारगी दहल उठी। इस अपील में मैडम कामा ने अंग्रेजी सरकार के खिलाफ अत्याचार संबंधी ऐसे गंभीर आरोप लगाये कि ब्रिटिश पार्लियामेंट में भी उसकी गूँज सुनाई दी। यह कार्य साधारण कार्य न था। उस समय समस्त विश्व में ब्रिटेन का दबदबा था, उसके विरोध में कोई भी गंभीर कदम उठाना शेर की मांद में प्रवेश करना था।

भीका जी कामा पर इंग्लैंड में जाने पर तो पहले ही प्रतिबंध लग चुका था। वे भारतीय क्रांतिकारी विचारों को देश विदेश में फैलाने के विषय में चिन्तनशील थी। अतः 1909 में उन्होंने एक साप्ताहिक पत्र अंग्रेजी में निकालने की योजना बनाई। जिसका नाम रखा ''वन्दे मातरम्'' उसके सम्पादक का काम श्याम जी कृष्ण वर्मा की सलाह से लाला हरदयाल को सौंपने का निश्चय किया गया, किंतु वे तो लंदन में ब्रिटिश सरकार की ज्यादतियों का शिकार हो रहे थे। मैडम कामा का निमंत्रण पाकर उन्होंने राहत की सांस ली। ''अंधा क्या चाहे दो आंखे''। यह वैसे भी हरदयाल जी की रूचि का कार्य था इसीलिए वे किसी प्रकार लंदन छोडकर पेरिस पहुँच गये। ''वन्दे-मातरम्'' में ऐसे आग उगलने वाले लेख होते थे जिनसे रग-रग में जोश और रोमांच भर जाता था। इससे ब्रिटिश सरकार आग बबूला हो उठी। ब्रिटेन सरकार नें फ्रांस सरकार से मांग की कि वह मैडम कामा को फ्रांस से निकालकर ब्रिटिश सरकार को सौंप दे। परंतु फ्रांस सरकार ने मांग अस्वीकार कर दी। रूष्ट होकर ब्रिटिश सरकार ने इन पर भारत में जाने पर भी प्रतिबंध लगा दिया।

जब प्रथम महायुद्ध (1914) में शुरू हुआ तो मैडम कामा ने भारतीय सैनिकों को अंग्रेजों के विरूद्ध भड़काने की कोशिश की। परंतु इस कार्य से फ्रेंच सरकार भी प्रभावित होती थी इतः सरकार ने इन्हें नजरबंद कर दिया। परंतु 1919 में महायुद्ध की समाप्ति पर यह प्रतिबंध हटा लिया गया।

उनके सहयोगी उन्हें ''भारतीय क्रांति की माता'' मानते थे जबकि अंग्रेज उन्हें कुख्यात महिला, खतरनाक क्रांतिकारी, अराजकतावादी नेता, ब्रिटिश विरोधी तथा षडयंत्रकारी नारी कहते थे। विदेशों में वे ''भारतीय राष्ट्रीयता की महान पुजारिन'' के नाम से विख्यात थीं। फ्रांसिसी समाचार पत्रों में उनका चित्र 'जॉन ऑफ आर्क' के नाम से छपा था। निश्चय ही श्रीमती कामा का यूरोप तथा अमेरिका के राष्ट्रीय एवं लोकतांत्रिक समाज में एक विशिष्ट स्थान था।

श्रीमती कामा का उद्देश्य साम्राज्यवाद के विरूद्ध विश्व जनमत जाग्रत करना था, विदेशी शासन से मुक्ति के लिए भारत की इच्छा को दावे के साथ प्रस्तुत करना था। भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ते हुए उन्होंने लंबी अवधि तक निर्वासित जीवन बिताकर अपार मुसीबतों का सामना किया, किंतु कभी हार नहीं मानी।

जीवन भार असुविधापूर्ण वातावरण तथा छत्तीस वर्ष तक निर्वासन की स्थिति में रहते हुए भी वे कभी अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुई। एकाकी जीवन, गहन परिश्रम, अभाव, असुविधा, भागदौड़ में जिंदगी कैसी बितायी, उनके सिवा कौन जान सकता हैं? ब्रिटिश सरकार का दबाव भी विभिन्न रूप में बढ़ रहा था। फ्रेंच सरकार ब्रिटेन से मैत्री संबंध बिगाड़ना नहीं चाहती थी। मैडम कामा जी की आयु भी सत्तर से ऊपर हो चुकी थी, ''व्यक्ति चाहे कितना भी साधन सम्पन्न क्यों न हो उसके कार्य करने की क्षमता की भी एक सीमा होती है। फिर जो व्यक्ति निरंतर अभाव और फरारी का जीवन बिता रहा हो, वह कब तक और कैसे जीवन की गति को निरन्तर प्राणवान बनाये रख सकता है?''

इन्हीं सब कारणों से श्रीमती कामा असाध्य रोग की शिकार हो गयी जब बीमारी ने उग्र रूप धारण कर लिया तो भारतीय नेताओं और जनता के लिए चिन्ता का विषय हो गया। देश में उनके प्रतिबंध के विरोध में भारी आन्दोलन के लक्षण हो गये। अन्त में सरकार ने उनपर से भारत प्रवेश पर लगा प्रतिबन्ध हटा लिया।

सन् 1935 में ये बीमारी की स्थिति में ही भारत आई। यहाँ अत्यन्त उत्साह से उनका भावपूर्ण स्वागत किया गया। परंतु दीपक का तेल लगभग समाप्त हो चुका था। भला सूखी बाती कब तक टिमटिमाती? 13 अगस्त 1936 को उस जुझारू बहादुर भारतीय नारी का निधन हो गया। इस प्रकार भारतीय क्रांति के नभ मण्डल का एक जाज्वल्यमान नक्षत्र अस्त हो गया और छोड गया अपनी अविस्मरणीय झिलमिलाहट। भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास में भीका जी कामा का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। उस त्यागमयी देवी को यह देश कभी भी भुला न सकेगा। हमारी हार्दिक श्रद्धांजलि।

''हजारों साल नर्गिस अपनी
बेसुरी पे रोती है।
तब कहीं चमन में होता है
दीदा-वर-पैदा।''

24-4, बिशन सरूप
कालोनी, पानीपत

(जनज्ञान से साभार)

thearyasamaj.org

वार्षिक सम्मेलन एवं वेद प्रचार

आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी मुरादाबाद का वार्षिक सम्मेलन 12-13-14 अक्टूबर को उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, श्री महावीर सिंह मुमुक्षु के प्रवचन एवं आर्य भजनोपदेशक श्री मोहित शास्त्री जी के सुन्दर भजन हुए। श्री ज्ञानेन्द्र गान्धी जी एवं रामलच्छी, श्री कल्यान वेदीजी आर्य, मथुरा प्रसाद आर्य, चमन लाल निभावन आदि-आदि का भरपूर योगदान रहा।

2. आर्य समाज राजनगर, गाजियाबाद में 23 अक्टूबर को प्रातः 8 बजे से महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस के रूप में जिला सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में सुन्दर आयोजन किया गया। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती पलवल का क्रान्तिकारी उद्‌बोधन हुआ। अध्यक्षता सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने की। श्याम वीर राघव जी के भजन हुए, संचालन जिला मंत्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य ने किया। श्रद्धानन्द शर्मा जी अध्यक्ष ने सभी का धन्यवाद किया। मंत्री सत्यवीर सिंह जी के संयोजन में प्रसाद वितरण किया गया।

3. आर्य समाज, दर्वेशपुर निकट मवाना, मेरठ में 24-25-26 अक्टूबर को ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रचार कार्यक्रम आयोजित हुआ। ब्रह्मा सुलभ शास्त्री जी रहीं, भजनोपदेशक श्री कुलदीप विद्यार्थी रहे। स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी विजयानन्द जी, वेदपाल शास्त्री, मवाना, प्रणव मिश्र बदांयू आदि-आदि विद्वानों के प्रवचन हुए। जिला सभा के अधिकारियों ने भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। श्री राजमुनि जी के जन्मोत्सव पर प्रतिवर्ष परिवार आयोजन करता है। श्री सतवीर सिंह आदि भाई बधाई के पात्र हैं।

महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव

4. आर्य समाज सीतादेई लालपुर जिला हापुड़ में 23 अक्टूबर को महर्षि निर्वाण दिवस मनाया गया, जिसमें आचार्य अरविन्द जी एवं स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के प्रवचन हुए। श्री जगवीर सिंह आर्य प्रधान आर्य समाज का उत्साह प्रशंसा योग्य है। पूरे ग्राम का अच्छा वातावरण है। यह ग्राम आर्य समाज के भजनोपदेशक श्री आशाराम जी आर्य की जन्मभूमि है।

5. आर्य समाज सालारपुर में 24 तारीख को नवसस्येष्टि यज्ञ एवं महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव मनाया गया। श्री देवकरण आर्य चौहान प्रधान आर्य समाज के परिवार में कार्यक्रम हुआ। श्री महेश आर्य, अशोक आर्य बहादुरगढ़ के संयोजन में स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती का उपदेश हुआ जिसका जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

6. आर्य समाज सालारपुर मेरठ के प्रधान चौ. सत्यपाल सिंह जी आर्य के परिवार में दीपावली एवं उनके स्वस्थ होने के उपलक्ष्य में स्वस्ति यज्ञ हुआ। गत मास में दुर्घटना होने पर प्रधान जी भारी अस्वस्थ रहे। स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती ने आशीर्वाद दिया एवं रणधीर कुमार शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न किया।

7. डा. चन्द्रपाल आर्य एवं डा. चन्द्रवीर आर्य ने आर्य समाज भद्वाली के माध्यम से 20 अक्टूबर को माता जी की स्मृति एवं दीपावली पर नवसस्येष्टि यज्ञ सम्पन्न कराया। कर्नल ढाका जी ने संयोजन किया। स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी का भावपूर्ण उपदेश हुआ।

8. वैदिक सत्संग मण्डल- हरपाल नगर, मुरादाबाद में 31 अक्टूबर को महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस मनाया गया। माता सरोज आर्या की अध्यक्षता में स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती का उपदेश हुआ। संयोजन सुदेश आर्य ने किया। श्री ज्ञानेन्द्र गान्धी जी ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

9. 2-3 अक्टूबर को कन्या गुरूकुल नारंगपुर का वार्षिक सम्मेलन मनाया गया। सम्मेलन में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, आनन्द पुरूषार्थी, सत्यवीर शास्त्री, ठा. विक्रम सिंह जी आदि विद्वानों के प्रवचन हुए। ब्रह्मचारियों का व्यायाम प्रदर्शन एवं बौद्धिक कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

10. गढ़गंगा मेले पर योग शिविर एवं वेद प्रचार शिविर का आयोजन 2 नवम्बर से 6 नवम्बर तक किया गया। जिला सभा हापुड़ के संयोजन में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने यज्ञ एवं योग शिविर में लोगों को आसन-प्राणायाम सिखाया। प्रातः सायं यज्ञ किया और उपदेश से जनता लाभान्वित हुई। मध्यान्ह एवं रात्रि में सम्मेलन हुए। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन एवं नारी जागरण तथा चरित्र निर्माण सम्मेलन, गंगा बचाओ सम्मेलन जिसमें श्री सत्यपाल यादव, जिला पंचायत अध्यक्षपति, कृष्णकान्त हूण पर्यावरणविद्, आनन्द आर्य हापुड, विकास आर्य हापुड, अशोक आर्य पिलखुवा, निरंजन सिंह शास्त्री, मात्र हरीशपाल, अरविन्द आर्य आदि ने विचार व्यक्त किए। राजपाल सिंह एवं प्रमोद आचार्य ने संयोजन किया। अनिल आर्य का सहयोग प्रशंसनीय रहा।

वेदों में आधुनिक विज्ञान

वेद विज्ञान की पुस्तक हैं। वेद मंत्रों की अवैज्ञानिक व्याख्या होने के कारण वेद, जन सामान्य से दूर हो गये। वैदिक विज्ञान की भाषा में इलेक्ट्रिसिटी को इन्द्र कहते हैं। विद्युत को हम प्रकाश के रूप में भी प्राप्त कर सकते हैं, उष्मा के रूप में भी, बल के रूप में भी। इसप्रकार अनेक रूपों में प्राप्त कर सकते हैं। यही वैज्ञानिक तथ्य यजुर्वेद 6/32 में दिखाया गया है।

1. "इन्द्राय त्वा वसुमते रूद्रवते" (यजु. 6/32)

हे मनुष्यों! आप लोग इन्द्र अर्थात् विद्युत को वसुमत् अर्थात् पृथ्वी पर पाये जाने वाली अनेक प्रकार की शक्तियों के रूप में प्राप्त कर सकते हो तथा रुद्रवत् अर्थात् अन्तरिक्ष में पायी जाने वाली शक्तियों के रूप में प्राप्त कर सकते हो।

2. "इन्द्राय त्वादित्यवते" (यजु. 6/32)

इन्द्र अर्थात् विद्युत को आदित्य अर्थात् प्रकाश के रूप में प्राप्त कर सकते है।

3. "इन्द्राय त्वाभिमातध्न" (यजु. 6/32)

विद्युत का प्रयोग युद्धक्षेत्र में शत्रु को मारने के लिए किया जा सकता है। अभिमति का अर्थ है शत्रु।

4. "श्येनाय त्वा सोममृते" (यजु. 6/32)

यज्ञ के द्वारा अर्थात् वैज्ञानिक युक्तियों के द्वारा विद्युत शक्ति का उपयोग पक्षियों की तरह आकाश में उड़ने के लिए किया जा सकता है।

5. "अग्ने त्वा रायस्पोषदे" (यजु. 6/32)

हे मनुष्यों वैज्ञानिक युक्तियों से विद्युत का प्रयोग अग्नि उत्पन्न करने के लिए किया जा सकता है। इस अग्नि से धन प्राप्त किया जा सकता है।

कृपाल सिंह वर्मा
253, कंकरखेडा, शिवलोक, मेरठ

शान्तियज्ञ एवं शोकसभा

1. 15 अक्टूबर को आर्य समाज खैया एवं आर्य समाज दतियाना, वीरसिंहपुर के माध्यम से आर्य समाज खैया के कोषाध्यक्ष मुकेश आर्य के दुर्घटना में मृत्यु होने पर शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। जिला सभा के प्रधान विकास आर्य, मंत्री अशोक आर्य, कोषाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र चौधरी विधायक गढ़ मदन चौहान, जिला पंचायत अध्यक्ष, सत्यपाल यादव, के.पी.सिंह प्राचार्य डिग्री कालेज, हापुड, व्रतपाल सिंह प्रधानाचार्य सिम्भावली इण्टर कालेज, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती-आचार्य केशवदेव शास्त्री, आचार्य रणधीर शास्त्री, आचार्य अरविन्द एवं सुधीर कुमार शास्त्री, मा. जगत सिंह, जितेन्द्र सिंह आर्य, पुनीत कुमार शास्त्री आदि ने अपनी श्रद्धांजलि प्रदान की।

2. 30 अक्टूबर को आर्य समाज, मुबारिकपुर के माध्यम से मुखिया परिवार में शान्तियज्ञ किया गया। वे सच्चे आर्य पुरूष थे। तिगरी के शुद्धानन्द जी के भाई अजबसिंह की मृत्यु होने पर शान्ति यज्ञ हुआ, बाबूराम आर्य तिगरी का भी इसी दिन शान्तियज्ञ हुआ। स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने परिवार में जाकर सभा की ओर से शोक संवेदना व्यक्त की।

3. आर्य समाज संकराटीला के प्रधान महीपाल सिंह जी की माता जी का स्वर्गवास हो गया। वे बड़ी धार्मिक महिला थी। 90 वर्ष के लगभग आयु में स्वस्थ रहते हुए जीवन जिया। स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने परिवार में जाकर शोक संवेदना व्यक्त की।

thearyasamaj.org

महामहिम राष्ट्रपति जी को गौहत्या, भ्रूण हत्या रोकने एवं नशाबन्दी के लिए आर्य उपप्रतिनिधि सभा, बरेली का ज्ञापन

प्रतिष्ठा में,

महामहिम राष्ट्रपति जी,
भारत सरकार, नई दिल्ली।

विषयः- गौहत्या, कन्या भ्रूण हत्या व नशा उन्मूलन रोकने हेतु एवं गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने हेतु ज्ञापन।

माननीय महोदय,

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, बरेली आपका ध्यान देश में निरंतर बढ़ रही गौहत्या व कन्या भ्रूण हत्या एवं नशाखोरी की ओर आकर्षित कराते हुए निवेदन करती है कि भारत सरकार द्वारा गौहत्या व कन्या भ्रूण हत्या को रोकने हेतु कानून बने हुए है, लेकिन केन्द्र सरकार व राज्य सरकार की उदासीनता, उपेक्षा, रिश्वतखोरी व भ्रष्टाचार के कारण गौहत्या व कन्या भ्रूण हत्या रोकने हेतु उत्तरदायी पुलिस, स्वास्थ्य विभाग, नगर निगम व अन्य विभागीय अफसरों व कर्मचारियों की इच्छाहीनता, धनलिप्सा व अकर्मण्यता के चलते हत्याओं में लिप्त लोगों के हौसले बुलन्द है। वह लोग गौ प्रेमी व अन्य अच्छे लोगों की आंखों में धूल झोंकने, झगड़ा करने व मारपीट करने पर आमादा रहते हैं। सामान्य नागरिक की तो औकात ही क्या, यह लोग पुलिस वालों पर भी हमला कर देते हैं। अवैध हथियारों से फायरिंग कर देते है। और भाग जाते हैं। यदि बात अधिक बढ़ती है तो राज्य सरकारों के मुखिया व केन्द्र सरकार के प्रभावशाली नेता वोट बैंक व तुष्टिकरण की नीति के चलते इन्हीं हत्यारों का पक्ष लेते हैं। जिसके परिणामस्वरूप गौहत्या व कन्या भ्रूण हत्या जैसे घोर निदंनीय, वीभत्स व राष्ट्र विरोधी व जन विरोधी कुकृत्यों पर रोक नही लग पा रही है और आये दिन मांस की नई नई दुकाने खुलती जा रही है, जिनके न तो लाइसेंस है और न ही कोई अनुमति है।

जबकि प्राचीन काल में भी अनेक हिन्दू व मुस्लिम राजाओं ने गौहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगा रखा था तथा वर्तमान में भी मुस्लिम धर्मगुरू मौलाना कल्बे सादिक ने मुस्लिम भाईयों से गाय की हत्या न करने की अपील की थी, लेकिन परिणाम शून्य ही रहा।

जबकि गाय हमारे राष्ट्र, मानवजाति तथा कृषि कार्य हेतु अति आवश्यक है। बच्चे के लिए माँ के बाद गाय का दूध ही सर्वोत्तम है। गौ मूत्र कितने भीषण रोगों से मुक्ति दिलाता है। गाय के गोबर से उत्तम कोटि का खाद बनता है तथा घर के लेप करने से कई तरह के कृमि नष्ट हो जाते है। गाय के मरने के बाद उसका चमड़ा, हड्डी व सींग आदि सभी उपयोगी रहते हैं। इसी प्रकार कन्यायें भी मानव जाति की जननी है। बिना कन्या के पुरूष की उत्पत्ति संभव नहीं है। देश में आये दिन कन्याओं की संख्या घटती जा रही है। जिसमें आबादी में महिला पुरूष का अनुपात प्रभावित हो रहा है, जबकि पूरे समाज के संचालन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। देश की चतुर्दिक प्रगति में महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान है। सृष्टि के आदि से ही स्त्री पुरूष का साथ रहा है। सीता, सावित्री, गार्गी, विद्योत्तमा, अहिल्या बाई, रजिया सुल्तान, सुचेता कृपलानी, विजय लक्ष्मी पंडित, सरोजनी नायडू, इंदिरा गांधी व लता मंगेशकर आदि ने देश की आन-बान और शान में चार चांद लगाये हैं। फिर भी देश में कन्या भ्रूण हत्या होना अति निन्दनीय व चिंतनीय है। इसमें लिप्त सभी लोगों को फांसी की सजा का प्रावधान होना चाहिए।

महात्मा गांधी चाहते थे कि देश में पूर्ण नशाबंदी लागू की जाये। देश में कुछ राज्यों में नशाबंदी लागू है। परंतु अधिकांश राज्यों में राज्य सरकारों ने नशाबंदी पर प्रतिबंध नहीं लगाया है। जिसके कारण आज का युवा नशाखोरी की ओर आकर्षित हो रहा है। और वह मदिरापान, धूमपान, नशीली दवाईयों तथा स्मैक का आदी होता जा रहा है। और नशे में विभिन्न प्रकार के अपराध कर रहा है।

अतः आर्य उपप्रतिनिधि सभा इस ज्ञापन के माध्यम से आपसे मांग करती है कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने एवं गौहत्या, कन्या भ्रूण हत्या व नशाखोरी में लिप्त लोगों के विरूद्ध कठोर से कठोर कार्यवाही की जाये तथा इन हत्यारों को संरक्षण देने वाले नेता, पुलिस, आबकारी विभाग व स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों के नाम सार्वजनिक किये जायें, जिससे देश की जनता के समक्ष इन लोगों का असली चेहरा आ सकें।

प्रधान
आर्य उप प्रतिनिधिसभा,
बरेली

सुनो स्वरूपानन्द जी! आप लगाकर ध्यान

पं. नन्दलाल निर्भय पत्रकार,
भजनोपदेशक

जगतगुरू दयानन्द थे, ईश्वर भक्त महान।
देशभक्त धर्मात्मा सत्वादी इंसान।।
सत्वादी इंसान, सदाचारी, तपधारी।
वीर साहसी बली, महात्यागी, उपकारी।।
चरित्रवान, गुणवान, वेद प्रचारक नामी।
मानवता के पुंज, निराले थे वे स्वामी।।
भूल गया था वेद पथ, यह सारा संसार।
पोंगापंथी धर्म के, थे तब ठेकेदार।।
थे तब ठेकेदार, पाप का जोर यहाँ था।
पाखंडियों का आर्यावर्त में शोर यहां था।।
वेद विरोधी लोग, यहाँ आदर पाते थे।
ईश्वर भक्त महान, यहाँ धक्के खाते थे।।
देवदूत दयानन्द ने किया वेद प्रचार।
काँप उठे थे धूर्तजन, सुन ऋषि की हुंकार।।
सुन ऋषि की हुंकार, नास्तिक खल दहलाये।
वैदिक पथ पर चलो, सभी ऋषि ने समझाए।।
कुरान, पुराण, इंजील, झूठ की है सब गठरी।
इन से कभी न स्वयं बनेगी दुनिया सगरी।।
सुनो स्वरूपानन्द जी! आप लगाकर ध्यान।
वेदों के पथ पर चलो, यदि चाहो कल्याण।।
यदि चाहो कल्याण, पुराणों को तुम त्यागो।
निराकार जगदीश, मान लो अब तो जागो।।
जग का स्वामी एक, न आप अनेक बनाओ।
सच्चाई उर धार, जगत में आदर पाओ।।
ईश्वर का सुमरन करो, आप सुधारो भूल।
साई पूजा का सुनो जड़ पूजा है मूल।।
जड़ पूजा है मूल, राष्ट्र के पतन का कारण।
करो आप अवतारवाद का शीघ्र निवारण।।
जड़ पूजा से हुई लूट भारत की भारी।
घातक है अवतार वाद की यह बीमारी।।
जगतगुरू दयानन्द के मानो तुम उपकार।
सुख पाओगे संत जी, तज दो बुरे विचार।।
तज दो बुरे विचार, महामानव बन जाओ।
आडम्बर दो त्याग, जगत में नाम कमाओ।।
याद रखो संसार, आपका यश गायेगा।
नाम स्वरूपानन्द, सार्थक हो जायेगा।।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ से सम्बद्ध उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को नियमानुसार वार्षिक चित्रों के प्रपत्र प्रेषित किये जा रहे हैं।

सभी आर्य समाजों को निर्देशित किया जाता है कि विधिवत् चित्रों को भर कर दशांश तथा सभा को प्राप्त व्यय धन, आर्यमित्र का शुल्क आदि सहित यथा समय प्रेषित करने की कृपा करें।

-कार्यालय अधीक्षक

thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१६२, सम्पादक-९५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

आर्य समाज मिश्रित जनपद सीतापुर (उत्तर प्रदेश) का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्य समाज मिश्रित जनपद सीतापुर (उत्तर प्रदेश) का वार्षिक उत्सव दिनांक 26 अक्टूबर 2014 से दिनांक 28 अक्टूबर, 2014 तक बड़ी धूमधाम एवं उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर तीनों दिन प्रातःकाल देवयज्ञ (हवन) किया गया जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया तथा विद्वानों के प्रवचनों से प्रभावित होकर कई युवक युवतियों ने दुर्व्यसनो को छोड़ने व यज्ञ करने का संकल्प लिया।

इस समारोह में वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, गऊ रक्षा सम्मेलन, चरित्र निर्माण सम्मेलन, स्त्री शिक्षा सम्मेलन तथा पाखण्ड खण्डण सम्मेलन आयोजित किए गये।

इस सम्मेलन में सन्यासी स्वामी विश्वावानन्द सरस्वती वैदिक गुरूकुल दखौला जनपद मथुरा (उ.प्र.) वैदिक विद्वान कवि पं. नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक ग्राम बहीनजनपद पलबल (हरियाणा) स्वामी अमरमुनि जी सीतापुर, श्री नेतराम शास्त्री सीतापुर, श्री रामनारायण शास्त्री बिहार, श्री प्रेमचन्द्र भजनोपदेशक सीतापुर ने अपने पावन उपदेशों व भजनों से जनता को लाभान्वित किया।

-महाशय बांके लाल आर्य
प्रधान,
आर्य समाज, सीतापुर

पं. सन्तोष वेदालंकार को पितृ शोक

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान उपदेशक पं. सन्तोष वेदालंकार के पूज्य पिता श्री लक्ष्मी नारायण आर्य का देहान्त कुछ कालिक अस्वस्थता के बाद उनके निवास स्थान 45क/एस.एच. एन./48 हंस नगर कालोनी, लखनऊ में दिनांक 10.11.2014 को हो गया। उनकी आयु 94 वर्ष थी। अन्त्येष्टि संस्कार उसी दिन पूर्ण वैदिक रीति से वैकुण्ठधाम श्रृंगार नगर नहर के किनारे सम्पन्न हुआ। जिसमें भारी संख्या में आर्यजनों ने उनके प्रति शोक सम्वेदना व्यक्त की। दिनांक 12.11.2014 को उनके ही आवास पर सायं 4 बजे से शान्ति यज्ञ व शोकसभा हुयी। जिसमें लखनऊ के तमाम आर्य नर-नारियों एवं विद्वानों ने पहुंचकर अपनी शोक सम्वेदना व्यक्त की।

मैं अपनी व आर्य मित्र परिवार की ओर से भी इस दुख की घड़ी में शोक सम्वेदना व्यक्त करते हुये परमपिता परमेश्वर से उनकी आत्मा की सद्गति एवं दुखी परिजनों को मनः शान्ति एवं धैर्य धारण कराने की प्रार्थना करता हूँ।

-सम्पादक

प्रो.उमाकान्त उपाध्याय दिवंगत

श्री भवानी लाल जी भारतीय से ज्ञात हुआ कि आर्य जगत् के प्रसिद्ध मनीषी विद्वान वक्ता एवं लेखक तथा पत्रकार प्रो. उमाकान्त उपाध्याय का निधन हो गया है। उनके निधन से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुयी है। उनकी दिवंगतात्मा को सद्गति एवं दुखी परिजनों को मनः शान्ति एवं धैर्य प्रदान करने की परमात्मा से प्रार्थना है। मैं अपनी और आर्य मित्र परिवार की ओर से इस दुख की घड़ी में शोक सम्वेदना व्यक्त करता हूँ।

-सम्पादक

आर्य समाज बाघमण्डी का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बाघमण्डी, सुल्तानपुर का वार्षिकोत्सव दिनांक 25, 26, 27, एवं 28 नवम्बर, 2014 को बाघमण्डी सुलतानपुर स्थित आर्य समाज मन्दिर में आयोजित है। भव्य शोभायात्रा 25 नवम्बर को तथा 26, 27, 28 नवम्बर को प्रातः 8 से 10 बजे वैदिक यज्ञ एवं सायं 5:30 से 9:00 बजे तक भजनोपदेशक एवं प्रवचन होगा।

डॉ. अरविन्द कुमार चतुर्वेदी
संयोजक

आर्य समाज मूल

अवसर मिला बन जाओ मानव
मानवीय गुणों का पहन के चोला।
सत्य नाम है उस चोले का
सत्य सदा केवल सत्य बोलना।।
दयानन्द की असीम कृपा से,
आर्य समाज से हम जुड़े सभी हैं।
थे सत्य पुजारी और सत्य के द्योतक,
देख सत्य ज्योति वह कहां नहीं है।।
चंचल मन को शान्त बना ले,
निखर जाएगा तेरा सुन्दर चोला।
सत्य नाम. . . . . .।।
सद्धर्मी बन सद्धर्म सदाकल,
जो सत्य नाम से जाना जाता
अवसर मिला वेद पंथी बन आ
वेद शास्त्र यही है मर्म बताता,
स्वयं पर्व बन मानवता का
सच्चे मानव का है श्रेष्ठ यह चोला।
सत्य नाम. . . . . .।।
हंसता दिखे जब कोई मानव प्राणी,
हंसी देख तुम भी हंस लेना,
दुखिया राह मिले जब कोई
धर्म यही दुखड़ा हर लेना,
सागर पथ की नीति यही है,
है धर्म सत्य नहीं झूठ वह बोला।
सत्य नाम. . . . . .।।

रचयिता-डॉ.बी.पी.सागर
अंतरंग सदस्य
आ.प्र.स.उ.प्र., लखनऊ

निर्वाचन

आर्य समाज जलालपुर अम्बेडकर नगर

प्रधान	::	श्री अर्जुन प्रसाद मिश्र
मंत्री	::	श्री नन्द किशोर आर्य
कोषाध्यक्ष	::	श्री श्रीश चन्द्र पटेल

आर्य समाज जलालपुर अम्बेडकर नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जलालपुर अम्बेडकर नगर एवं विद्यालय का संयुक्त वार्षिकोत्सव दिनांक 11.11.14 से 14.11.2014 तक सोल्लास मनाया गया।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।